श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

पन्दल्गुडि श्रीश्रीनिवासशर्मणा विरचितम्

॥ श्रीयदुनाथगद्यम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुजमहादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीयदुनाथगद्यम् ॥

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

वन्देऽरविन्दासनमश्ववक्त्र
शङ्खारिकोशान् दधतं च मुद्राम्।
ध्यानेन यस्यामलवाग्विसृष्टौ
मन्दोऽपि सद्यः कविरादिमः स्यात्॥

जयत्यखिल लोकात्मा वासुदेवः सनातनः।
वसुदेवस्य पुत्र त्वं प्राप्य चैव विशेषतः॥

जय जय यादवनाथ !

यदुकुल नलिन दिनेश !

विश्व जन्मावन लय लील !

सकल जगद्व्यापार सहचरी भूत कमला समेत !

निरवद्यानन्त कल्याण गुण निलय !

अनन्तगरुड विष्वक्सेनादि नित्य मुक्तोपासिताप्राकृत दिव्य मङ्गळ विग्रह !

आगाध भवजलधि तारण तरणी भूत चरण युगळ !

गत्यन्तर रहित कृपण जन सुलभ !

प्रपन्न जन पारिजात !

श्रित जन रक्षा दीक्षित !

खलनिवह दमनकृत सुजन भयहरण !

स्वेच्छावतार !

भारायमाण बहुदृप्ताति वीर नृप सङ्घाऽविनय चकितविश्वंभराभिगत
पद्मासनादि सुर दत्ताभयेश !

सङ्कल्पित देवकी वसुदेव पुत्र भाव !

अवतरण समय संदर्शित निजस्वरूप !

अरिदर पद्मादि रेखालङ्कृत पादारविन्द !

चारु सङ्गत जङ्घा जानूरु युग्म !

गोपित विश्वाण्ड कोटि गम्भीरावर्त पङ्कजनाभ !

श्रीवत्स लाञ्छित विशाल वक्षस्थल शोभि कौस्तुभ रत्न !

शङ्ख चक्राद्यायुध लाञ्छित चतुर्भुज !

कोमल कुटिल कुन्तलाल्यावृत सुन्दर वदनारावन्द !

अम्बुज नयन !

पङ्कज वदन !

चारुनूपुरोदर बन्ध कङ्कण केयूर कटक कुण्डल मकुट
भूषित मञ्जु डिम्भ वेष !

तडिदभि भवत्कटि विलसित दिव्य पीताम्बर !

भवतपन तापित भक्तजन हृदयानन्द वर्षि नीलजीमूत !

कारागृह प्रविष्ट ब्रह्मादि बृन्दारक बृन्द वन्दित !

निजसेवासञ्जात दिव्यज्ञान देवकीवसुदेव संस्तुत !

तत्प्रार्थना सङ्कुचित परस्वरूप !

अजहत्स्वत्स्वभाव !

निजमायाविमोहित निखिल पुर पाल !

गोकुल जिगमिषा सङ्गलित कारागारकवाटार्गल वसुदेव पादनिगल !

रघुवर सहचर कपिगण पथलघु वितरण विमुखजडमति निजपति
जलनिधि गलितयशः कलन कृतमति विगतरय तनुतर तनुतरणि
दुहितृ सादर विहित गोकुल मार्ग !

स्वाज्ञानुसारि वसुदेव प्रापित नन्दगोपावसथ !

यशोदा शयन शायित शैशवावस्थ !

बालरव मुदित गोपजन बोधित पुत्र जन्म सन्तुष्टनन्दगोपकृत दिव्य जनन महोत्सव !

सन्ततानुगत सङ्कर्षण सहाय !

वसुदेवानीत माया प्रबोधित निज शत्रु जन्म वृत्तान्तश्रवणकुपित कंस प्रेषित सर्व बालारि निग्रह !

बकीविषस्तन्य चित्रोपहारापवर्गप्रदान प्रकाशितविचित्र चारित्र !

उत्क्षिप्तावक्षिप्त शकट तृणावर्त !

मृत्स्नाशनाशङ्कि यशोदालोकित विश्वरूपास्य !

परत्वबोधक गर्गकृत गूढार्थनामधेय !

चिरन्तन सरस्वती दृग विषयोऽपि यशोदाग्रहण विषय !

अगणित गुण गणा परिमितोऽपि परिमित गुण गोचर !

भक्त जन परवश !

शापमोचनानुगृहीत नलकूबर मणिग्रीव !

रुचिर बृन्दावनावास !

स्वीकृत बालगोपाल वेष !

कंस प्रेषित बकवत्स धेनुकाद्यसुर निषूदन !

अजमायापनीतानन्त गोवत्स वत्सपालादिरूपधारण !

अमेयनिजमायावलोकन विस्मित विरिञ्चिनिर्धारित सर्वाधिक प्रभाव !

असुर गण दुर्धर्ष सङ्कर्षण साधित धेनुकासुर भञ्जन !

कालिन्दी पानीय दूषक गरलानलोपेत कालीयमर्दननटन चातुरी वीक्षण नन्दित देवबृन्द !

स्वपादाघात सङ्क्रुद्ध भोगि भोगाबद्धनिज जीवन शङ्कामूर्छित मातृजनोज्जीवन !

दावाग्नि पान पालित बन्धुजन समूह !

अबालबल बल भद्रकारित प्रलम्बासुर निग्रह !

दावान लालीढ मुञ्जाटवीमध्य सञ्चार संभ्रान्त गोपाल गोवत्स रक्षाविधान प्रभाव !

स्वलीलागुण लावण्य मोहित व्रजकन्यका चरितकात्यायनीव्रतस्नान समयमुषित चित्रवस्त्रनिचय शोभित कुन्दशाखाधिरूढ गोपिकावल्लभ !

गोपीमोहन मुरली निनाद !

असमाप्त यज्ञान्न याचना प्रख्यापित विप्रपत्नी भक्त्यतिशय !

निजमख विघटन कुपित शत मखाज्ञप्त संवर्तधनवर्ष वित्रस्त व्रजजन रक्षण कृतक्षणस्वाङ्गुल्युद्धृत गोवर्धन गिरिगर्त प्रविष्टगोपजन वर्णित विविध विचित्रानन्त शक्ते !

स्वप्रभाव प्रभञ्जित पुरुहूत गर्व !

सुराधिपविनुत देवाधिप वैभव !

कमलासनादिष्ट कामधेन्वभिषिक्त गोविन्द बिरुद !

यमुनावगाढ वरुणालय नीत नन्द विमोचन !

शशिकर निकर विलसित शरत्क्षपासंवर्धितोन्मादसर्व जन मनोहर वेणुगानाकृष्ट गोपी सहस्रारब्धरासक्रीडा विनोद !

प्रत्यङ्गनालिङ्गित बालगोपाल !

स्व सौन्दर्य गर्व कारित विरहानल तापित गोपीमण्डल संमुखाविर्भूत मन्मथ मन्मथाकार !

निर्वर्तित जल स्थल क्रीडा विशेष !

आशी विषग्रस्त नन्द विमोचन !

मोचित सुदर्शन शाप !

स्वेच्छाविहार विघटक शङ्ख चूडशीर्षापनयन नैपुण्य !

अरिष्टवध निरस्त सर्व लोकारिष्ट !

व्योमासुर निधनकृत व्योमचरदवन !

हय रूप धर केशि वध प्रसिद्ध केशव नामधेय !

देवकार्य विचक्षण देवर्षि बोधित कंस प्रषिताक्रूरप्रापित मधुरासकाश !

प्रासाद हर्म्यादि सौधाधिरूढ निजदर्शनोत्सुकसुन्दरी बृन्द नयनारविन्द निवहोन्मीलनबालसूर्य !

महाराज रजकापहृत चित्र वर्णवस्त्रालङ्कृतगोपाल वयस्य !

स्वानुकूल तन्तुवाय माला काराद्युपहृत नानावर्णवस्त्र पुष्पाद्यलङ्कृत दिव्य देहलावण्य !

कंस दासी दत्त कस्तूरिका कुङ्कुम परिमल शीतलरक्त चन्दनानुलिप्त कमला कमनीय विशाल वक्षःस्थल !

स्व सौन्दर्य मोहित सैरन्ध्री काय कौटिल्य त्रितयऋजूकरण !

तत्प्रार्थित अङ्ग संश्लेष वर संप्रदान !

पूजा सुगुप्त नृप चापद्विधाकरणशब्द प्रकम्पित समस्तारि हृद्यात काल स्वरूप !

निजदर्शनोत्सुक नरवर पूरित रङ्ग प्रवेश !

सहजबल सहाय बालरूप !

मुष्टी मुष्टि निपुण मुष्टिक चाणूर महीधरमर्दन वज्र सार मुष्टिक !

अखिल नरवर प्रार्थना पूरक परम पुरुष भाव !

जितानङ्ग सुन्दराङ्ग !

अंसावलम्बि गोपाल हस्त !

सापराध जन सन्दर्शित दण्डधर रूप !

कंस भय वित्रस्त यशोदानन्द नन्दन !

दुःस्वप्न चकित कंस बालरूप !

अज्ञजन दुर्विज्ञेय !

परमयोगि हृद्येय !

वृष्णि यादव वीर !

कुलाचल सदृश कुवलयापीड मत्तमातङ्गाकर्षणपातन निपुण सिंह डिंभ !

अखिल भयावह मल्लयुद्ध पराजित मुष्टिक चाणूर !

विविध नवरत्न वर मण्डित नृपोत्तुङ्ग सिंहासनाकृष्टविश्वंभरापतित मत्तद्विपायुत बलोपेत भोजेन्द्र पञ्चासुशौर्युग्रसेनादि कारागृहावास मोक्षप्रदानार्ह मुष्टिप्रभाव !

निगल निर्मुक्त देवकी वसुदेव चकोर चन्द्र !

उग्रसेन प्रत्यर्पित राज्यकार्य !

बृन्दावन प्रस्थापित यशोदा नन्दगोप !

कृतोपनयनब्रह्मोपदेश !

निःश्वसित वेदोऽपि निर्वर्तित गुरुकुलवास विडंबन !

मृत पुत्रानयन दक्षिणा तोषित सान्दीपिनिगुरो !

स्वविरहानलाकुल गोकुल प्रेषित उद्धवाश्वासितयशोदा नन्दादि बन्धुजन वर्ग !

उद्धव मुखोपदिष्ट तत्त्वज्ञानयुत वल्लवीजनवल्लभ !

हस्तिनापुरप्रहित सारथि वराक्रूरावेदित धृतराष्ट्राभिप्राय !

अक्रूर सैरन्ध्रि मनोरथ पूरण परिपूर्ण मनोरथ !

इति पूर्वार्धकथा

जामातृ वध कुपित मगधेश संरुद्ध मधुरापुरीनिखिलरक्षा विधान प्रकारैक दक्ष !

नवनवानीत जरासन्ध विंशत्यक्षौहिणी सैन्यविध्वंसन कृत धराभार हरण !

कलहातुर कालयवन कालायमानोन्मीलनमुचुकुन्द प्रार्थित मुक्तिप्रदान !

मगधाधिपाक्रान्त मधुराजनत्राण सङ्कल्पसंप्रेरितामर्त्य शिल्पि संस्थापितद्वारकावास भूपाल गोपाल !

स्वीय गुणरूपानुरूप रुक्मिणी प्रेषित पत्रिका वेदितविवाह सङ्कल्प !

अंबिका प्रसादानन्तर प्रत्यागमन समय सञ्जात निजपति दर्शनलालसालसगति विलासावलोकन जडायित चित्तजरासन्ध भौमादि वीरगण समक्ष स्वीकृतभीष्मक राजकन्यक !

वितथीकृत रुक्मिसङ्कल्प !

नानाविध क्रमुक नालिकेर रम्भाशतशातकुम्भस्तम्भशोभित द्वारकागत भीष्मकादिराजनिकर निर्वर्तित रुक्मिणी विवाहमहोत्सव !

सङ्ग्रामजित जाम्बवत्सुता जाने !

सत्राजिदर्पित स्यमन्तक रत्नापनीत लोकापवाद !

स्वीकृत सत्यभाम !

कृत कालिन्द्याद्यष्ट महिषी विवाह !

समर निहत नरकावरुद्ध षोडश सहस्र राजन्य कन्यकारमण !

विविध गृहस्थ धर्मानुष्ठानावलोकन कुतुकनारद सेवित विपुल कुटुम्ब !

पशुपति वर दृप्त बाणासुरायुत करच्छेदसङ्क्रुद्ध रुद्रादिगणविजय संसिद्धशर्वाधिकविक्रम !

युद्ध निरुद्धानिरुद्ध विमोचन !

अयुत गज सारयुत भीमकृत मगधेश वधविहितसन्त्राण सन्तोष समुपेत साधुनृप सङ्घनुतसर्व जगदीश !

मखमुख निज समर्हणा सहिष्णु दमघोषसूनूक्त मिथ्याभि शाप शत सञ्जातमन्युस्वचक्राशु सञ्छिन्न शिशुपालशिर्षोरु सनकादि शाप !

साल्व विदूरथ दन्तवक्र विनाशन !

पाण्डव समर सहाय !

विजय रथ सारथे !

भक्त्युपहृत पृथुक तण्डुल भक्षणावसर सङ्कल्पितक्षुत्क्षामा योगक्षेम !

विध्वस्ताशेष कुचेल दारिद्र्य !

मृत सप्तार्भक दर्शन तोषत देवकी वसुदेव !

भृगु प्रख्यापित सर्वोत्तम स्वभाव !

स्वान्तरङ्गोद्धवानु गृहीत सकल धर्मनिचय !

ब्रह्मादि देवगणवन्दित परस्वरूप !

चिदचिच्छरीर !

जगदन्तरात्मन् !

कल्याणगुणनिलय !

पाहिमां पाहि मां पाहि मां वासुदेव !

इत्युत्तरार्धकथा

यदुनाथ गद्यमेतद्वसुदेव तनूजतुष्टये भूयात्।
अपि दोषवन्मुदे स्यात् शुकवाक्त्यारज्ञसाधुचित्तानाम्॥

श्रीकृष्ण कल्पतरु पादगत पुंसां
सद्यश्चतुर्विध पुमर्थफल सिद्धिः।
श्रीवास दासकृत गद्यपठनेन
प्रीतः परं भवतु चाशु यदुनाथः॥

॥ इति श्रीयदुनाथगद्यं संपूर्णम्॥

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः॥